P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-VIII* January- 2016

उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान शिक्षण की स्थिति, मुद्दे एवं चुनौतियां

सुषमा तलेसरा
प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
विद्या भवन, जी. एस. शिक्षक
महाविद्यालय, (सी.टी.ई.)
उदयपुर, राजस्थान

रिंकू सुखवाल
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान,
हाडी रानी शिक्षण प्रशिक्षण
महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान शिक्षण की स्थिति, मुद्दें एवं चुनौतियों से संबंधित है। NCF-2005 के आधार पर पाठ्यक्रम एवं राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण में जो सुधार किया गया है। वह कितनी खरी उतरी तथा इसमें क्या कमियां एवं समस्याएँ है, का अध्ययन करना इसका उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उदयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के सरकारी एवं गैर–सरकारी 400 छात्रों तथा 35 प्राध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। उपकरणों के रूप में प्रश्नावली (छात्रों के लिए) साक्षात्कार अनुसूची तथा अवलोकन प्रपत्र (प्राध्यापकों के लिए) का प्रयोग किया गया तथा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष से पता चलता है कि राजनीति विज्ञान शिक्षण में नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग कम पाया गया तथा सहायक सामग्रियों के रूप में केवल श्यामपट्ट का प्रयोग ही अधिक होता है।

मुख्य शब्द : स्थिति, मुद्दें, चुनौतियाँ उच्च माध्यमिक स्तर, राजनीति विज्ञान।

प्रस्तावना

राजनीति एक प्राचीन कला है– शायद उतनी ही पुरानी जितना कि राज्य है, परन्तु सामाजिक विज्ञान के रूप में इसका विकास वर्तमान युग में ही हुआ है। राजनीति विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें राज्य और शासन की समस्याओं और समाज में शक्ति के औचित्यपूर्ण प्रयोग का अध्ययन किया जाता है। राजनीति अर्थात् 'पॉलिटिक्स' शब्द यूनानी भाषा के 'पोलिस' अर्थात् नगर राज्य और 'पॉलिटिया' नामक शब्दों से बना है। राजनीति की अपेक्षा 'राजनीति विज्ञान' शब्द अधिक व्यापक और अर्थपूर्ण है। सम्पूर्ण राज्य सिद्धान्त इसमें समाया हुआ है। इसमें सैद्धान्तिक राजनीति और व्यावहारिक अथवा प्रयोगात्मक राजनीति दोनों ही सम्मिलित है। सिद्धान्त पक्ष में इसका सम्बन्ध राज्य की उत्पत्ति स्वरूप उद्देश्य उपयोगिता आदि से है तथा व्यावहारिक अथवा प्रयोगात्मक पक्षों में इसका सम्बन्ध राजनीतिक संस्थाओं के संगठन तथा उनके कार्यों और उनके विभिन्न प्रकारों से है।

पाल जैने के अनुसार, 'राजनीति विज्ञान सामाजिक विज्ञान का वह अंग है जिसके अन्तर्गत राज्य के तत्वों तथा शासन के सिद्धांतों पर विचार किया जाता है।''

गेटेल के अनुसार, ''राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत राज्य में अतीत, वर्तमान और भविष्य तथा राजनीतिक संगठन और राजनीतिक सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है।''

इस प्रकार राजनीति विज्ञान में राज्य शासन के सिद्धान्तों शासन प्रणालियों राजनीतिक संगठन गतिविधियों आदि का अध्ययन किया जाता है।

विद्यालयों में राजनीति विज्ञान की कुछ इकाइयों को नागरिक शास्त्र के रूप में पढ़ाया जाता रहा है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में सुझाव दिया गया था कि नागरिक शास्त्र के नाम को बदलकर राजनीति शास्त्र कर दिया जाए। नागरिकों की आज्ञाकारिता और निष्ठा तथा प्रगति के सार्वभौमिक नियमों के अनुसार सभ्य समाज का निर्माण औपनिवेशिक नागरिक शास्त्र के मूल लक्षण थे। इसके विपरीत राजनीति शास्त्र ऊर्जावाद का परिचायक है। जिसमें सत्ता की प्रभुसत्ता सम्पन्न संरचना और सामाजिक बलों द्वारा उनका विरोध आदि प्रक्रियाएँ शामिल है। वस्तुतः राजनीति शास्त्र एक ऐसे सभ्य समाज की कल्पना करता है जो अधिक संवेदनशील अवगत और उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण कर सकें।

राजनीति विज्ञान सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत आता है। सामाजिक विज्ञान समाज के विविध तत्वों को अपने अन्दर समेटता है, इसमें इतिहास

भूगोल, राजनीति विज्ञान आदि विषयों की विस्तृत सामग्रियाँ सम्मिलित है। NCF-2005 के अनुसार सामाजिक विज्ञान शिक्षण का ध्येय बच्चे के नैतिक और मानसिक ऊर्जा प्रदान करना होना चाहिए ताकि वे स्वतंत्र रूप से सोच सके। राजनीति विज्ञान शिक्षण भी इस उद्देश्य की प्राप्ति बच्चों में राजनीतिक विषयों पर विवेचनात्मक चिन्तन की योग्यता को बढ़ावा देकर कर सकता है, आलोचनात्मक चिंतन के मद्देनजर शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए एक ऐसी व्यापक पाठ्यचर्या की कल्पना की गई है, जिसमें ज्ञान प्राप्ति में बिना किसी दबाव के विद्यार्थियों और शिक्षकों की भागीदारी हो। ऐसी सहायता तथा सहभागिता के द्वारा ही विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए पठन–पाठन रूचिपूर्ण और आनन्ददायक बनाया जा सकता है।

सीखने की प्रक्रिया को परस्पर भागीदारी की प्रक्रिया बनाने के लिए आवश्यक है कि मात्र सूचनाओं के आदान–प्रदान के स्थान पर वाद–विवाद और परिचर्चा को प्राथमिकता मिलें। अवधारणाओं को व्यक्तियों और समुदायों के सजीव अनुभवों द्वारा विद्यार्थियों को स्पष्ट किया जाना चाहिए। शिक्षण के उपागम को बंधनमुक्त होने की आवश्यकता है। राजनीति विज्ञान शिक्षण में यह आवश्यक है कि छात्र भारतीय संविधान में प्रतिष्ठित मूल्यों जैसे न्याय स्वतन्त्रता समानता भाईचारा एकता और राष्ट्रीय एकीकरण से अवगत हो और एक समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण को समझ सकें।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के आधार पर शिक्षण प्रक्रिया सहभागिता तथा परिचर्चा पर आधारित होनी चाहिए। उदाहरण के लिए कथा–वाचन, चित्रकला, संगीत पठन–पाठन समस्या समाधान, भूमिका निर्वहन आदि।

NCF-2005 में सुझाये गए पाठ्यक्रम शिक्षण विधियाँ मूल्यांकन प्रणाली आदि को ध्यान में रखते हुए शोध का यह विषय उत्पन्न हुआ है।

शोधार्थी द्वारा राजनीति विज्ञान शिक्षण पर शोधकर यह जानने का प्रयास किया गया कि 'नई पाठ्यचर्या' पर आधारित राजनीति विज्ञान शिक्षण एवं पाठ्यक्रम में जो सुधार किया गया है, वह अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कितनो खरी उतरी है एवं विद्यार्थियों की कितनी आवश्यकता को पूरा करती है। इसमें क्या कमियाँ एवं समस्याएँ हैं तथा किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है। इसके लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं। अतः राजनीति विज्ञान शिक्षण में रूचि उत्पन्न करने के लिए प्रस्तुत शोध में राजनीति विज्ञान शिक्षण की स्थिति, मुद्द एवं चुनौतियों का अध्ययन किया गया।

समस्या कथन

शोधार्थी का प्रयोजन उदयपुर जिले (ग्रामीण/शहर) में उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान शिक्षण की स्थिति, मुद्दें एवं चुनौतियों का अध्ययन करना है। अतः समस्या कथन निम्नानुसार हैं–

''उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान शिक्षण की स्थिति, मुद्दे एवं चुनौतियाँ''

अध्ययन का औचित्य एवं उपादेयता

आज का छात्र कल का नागरिक है। आज का युग लोकतन्त्र का युग है तथा लोकतन्त्र को सफल बनाने में नागरिकों की सहभागिता तथा योगदान आवश्यक है। छात्र एक सफल नागरिक की भूमिका तभी निभा सकते है, जब उसे छात्र जीवन में ही लोकतन्त्र, चुनाव जन सहभागिता एवं राजनीति विज्ञान के अन्य तथ्यों की भली प्रकार समझ विकसित हो सके। अतः प्रजातंत्र की सफलता में नागरिकों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है, इस विषय (राज. विज्ञान) द्वारा हमें अपने पास पड़ौस ग्राम नगर राज्य एवं राष्ट्र के विषय में विस्तृत जानकारी मिलती है। साथ ही इस बात का भी ज्ञान मिलता है कि नागरिक होने के नाते हमारे क्या अधिकार एवं कर्तव्य है। देश प्रेम एवं देश के प्रति वफादारी का भाव भी यह उत्पन्न करता है। जन–साधारण में राजनैतिक चेतना का विकास करने हेतु राजनीति विज्ञान बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजनीति विज्ञान द्वारा छात्रों को स्थानीय स्वशासन, राजकीय शासन केन्द्रिय शासन व्यवस्था का ज्ञान कराया जाता है ताकि वह जिस देश के नागरिक हैं, वहाँ की शासन व्यवस्था को समझ सकें एवं अपने दायित्वों को पहचान कर अपना सफल योगदान दे सकें।

माध्यमिक शिक्षा आयोग में कहा गया है–

''लोकतंत्र में नागरिकता एक चुनौतीपूर्ण दायित्व है जिसके लिए प्रत्येक नागरिक को सतर्कता के साथ प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।''

अतः इस विषय के 'महत्व को देखते हुए यह जानना आवश्यक है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 के आधार पर राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तका, विधाओं आदि में NCERT द्वारा जो संशोधन, संर्वधन हुआ है, वह किस दिशा में हुआ है? पाठ्यपुस्तक अध्यापक एवं छात्रों के समझ में कितनी खरी उतरी है? शिक्षण भागीदारी प्रक्रिया पर आधारित है? साथ ही नई–नई पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु प्रस्तुतीकरण किस प्रकार किया गया है? तथा क्या राजनीति विज्ञान का शिक्षण उपयुर्क्त एवं उपयोगी है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. राजनीति विज्ञान शिक्षण की वर्तमान स्थिति का पता लगाना।
   a. पाठ्यक्रम
   b. पाठ्य पुस्तक
   c. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया
   d. मूल्यांकन
   e. शिक्षण विधि
2. राजनीति विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित मुद्दों का पता लगाना।
3. NCF-2005 के परिपेक्ष में राजनीति विज्ञान शिक्षण के पाठ्यक्रम की चुनौतियों का पता लगाना।
4. राजनीति विज्ञान शिक्षण का नवीन मॉडल सुझाना।

अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान के उदयपुर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य को प्रत्येक विद्यालय के कक्षा 11वीं व 12वीं के वैकल्पिक विषय के रूप में राज. विज्ञान शिक्षण कराने वाले प्राध्यापकों एक उसकी कक्षा के छात्रों तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शाधकार्य में उदयपुर जिले के शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है।

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-VIII* January- 2016

4. प्रस्तुत शोधकार्य में उदयपुर शहर एवं उदयपुर ग्रामीण क्षेत्र के राजस्थान शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों को ही शामिल किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों की व्याख्या

स्थिति

प्रस्तुत शोध में स्थिति से तात्पर्य (Higher Secondary) उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीतिक विज्ञान शिक्षण की वर्तमान वस्तु स्थिति से है।

मुद्दें

मुद्दों से तात्पर्य उन सभी परिस्थितियों अथवा समस्याओं से है जिनको समझने के लिए विचार–विमर्श की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध में मुद्दों से आशय उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान में आने वाले विभिन्न मुद्दे हैं।

चुनौतियाँ

राजनीतिक विज्ञान को सरल, सरस, रूचिकर, गहन व उपयोगी बनाने में आने वाली बाधाओं को चुनौती माना गया है।

उच्च माध्यमिक स्तर

उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कला संकाय के कक्षा 11वीं एवं 12वीं के छात्रों से है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक पद्धति द्वारा किया गया। ऐसे उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया जो हिन्दी माध्यम हो तथा उसमें कला विषय में राजनीति विज्ञान हो।

Sample Design

क्र.सं	उच्च माध्यमिक स्तर (11–12)	उदयपुर जिला शहरी			उदयपुर जिला ग्रामीण			कुल
		सरकारी	निजी	कुल	सरकारी	निजी	कुल	
1	विद्याथी	120	80	200	120	80	200	400
2	प्राध्यापक	11	7	18	9	8	17	35

शोध की विधि

प्रस्तुत शोध विधि में नोर्मेटिव सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, शोध की प्रकृति को देखते हुए सर्वेक्षण विधि सर्वोत्तम है।

शोध उपकरण

अतः प्रस्तुत शोध प्रतिवेदन में आँकड़ों के संग्रहण हेतु एक से अधिक प्रकार के स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है जो निम्न है–

1. **साक्षात्कार अनुसूची** – प्राध्यापकों के लिए
2. **स्वनिर्मित प्रश्नावली** – विद्यार्थियों के लिए
3. **अवलोकन प्रपत्र** – प्राध्यापकों के लिए
4. **पाठ्यक्रम का विश्लेषण** –NCF-2005 पर आधारित उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम का वि"लेषण
5. **पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण**– NCF-2005 पर आधारित उच्च माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान विषय की पाठ्य पुस्तक का वि"लेषण

सांख्यकीय तकनीक

1. Mean मध्यमान
2. 't'-Test
3. प्रतिशत
4. मानक विचलन

सारणी सं. 1.1

राजनीति विज्ञान शिक्षण में 'स्थिति' से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों के प्रति शहरी व ग्रामीण विद्यालय के छात्रों के अभिमत का तुलनात्मक विश्लेषण

क्षेत्र	न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्य अंतर	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
A पाठ्य–पुस्तक से संबंधित	ग्रामीण	200	25.23	4.927	0.055	0.111	असार्थक
	शहरी	200	25.29	4.978			
B सहायक सामग्री एवं तकनीक से संबंधित	ग्रामीण	200	14.69	2.910	0.875	3.036	सार्थक
	शहरी	200	13.82	2.853			
C शिक्षण विधि एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं से संबंधित	ग्रामीण	200	14.24	4.518	1.600	3.792	सार्थक
	शहरी	200	12.64	3.898			
D शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से संबंधित	ग्रामीण	200	38.25	7.423	2.820	3.564	सार्थक
	शहरी	200	35.43	8.374			

सारणी सं. 1.2

राजनीति विज्ञान शिक्षण में 'स्थिति' से संबंधित कुल क्षेत्रों के प्रति शहरी व ग्रामीण विद्यालय के छात्रों के अभिमत का तुलनात्मक विश्लेषण

क्षेत्र	न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्य अंतर	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
कल A B C D	ग्रामीण	200	92.41	14.074	5.240	3.639	सार्थक
	शहरी	200	87.17	14.719			

सारणी संख्या 1.1 के अनुसार

ग्रामीण छात्रों का क्षेत्र प्रथम पर मध्यमान 25.23 तथा मानक विचलन 4.927 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार शहरी छात्रों का क्षेत्र प्रथम पर मध्यमान 25.29 तथा मानक विचलन 4.978 प्राप्त हुआ जिसका माध्य अंतर 0.055 तथा टी का मान 0.111 प्राप्त हुआ जो कि असार्थक है क्योंकि

यह सार्थक होने के लिए 0.05 स्तर पर आव"यक मान 1. 97 से कम है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि ग्रामीण व शहरी छात्रों के क्षेत्र प्रथम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

ग्रामीण छात्रों का क्षेत्र द्वितीय पर मध्यमान 14. 69 तथा मानक विचलन 2.910 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार शहरी छात्रों का क्षेत्र द्वितीय पर मध्यमान 13.82 तथा मानक विचलन 2.853 प्राप्त हुआ जिसका माध्य अंतर 0.875 तथा टी का मान 3.036 प्राप्त हुआ जो कि सार्थक है क्योंकि यह सार्थक होने के लिए 0.01 स्तर पर आव"यक मान 2.59 से अधिक है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि ग्रामीण व शहरी छात्रों के क्षेत्र द्वितीय में सार्थक अंतर है।

ग्रामीण छात्रों का क्षेत्र तृतीय पर मध्यमान 14.24 तथा मानक विचलन 4.518 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार शहरी छात्रों का क्षेत्र तृतीय पर मध्यमान 12.64 तथा मानक विचलन 3.898 प्राप्त हुआ जिसका माध्य अंतर 1.600 तथा टी का मान 3.792 प्राप्त हुआ जो कि सार्थक है क्योंकि यह सार्थक होने के लिए 0.01 स्तर पर आव"यक मान 2. 59 से अधिक है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि ग्रामीण व शहरी छात्रों के क्षेत्र तृतीय में सार्थक अंतर है।

ग्रामीण छात्रों का क्षेत्र चतुर्थ पर मध्यमान 38.25 तथा मानक विचलन 7.423 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार शहरी छात्रों का क्षेत्र चतुर्थ पर मध्यमान 35.43 तथा मानक विचलन 8.374 प्राप्त हुआ जिसका माध्य अंतर 2.820 तथा टी का मान 3.564 प्राप्त हुआ जो कि सार्थक है क्योंकि यह सार्थक होने के लिए 0.01 स्तर पर आव"यक मान 2. 59 से अधिक है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि ग्रामीण व शहरी छात्रों के क्षेत्र चतुर्थ में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या 1.2 के अनुसार

सभी ग्रामीण छात्रों के कुल चारों क्षेत्रों पर मध्यमान 92.41 तथा मानक विचलन 14.074 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार शहरी छात्रों के कुल चारों क्षेत्रों पर मध्यमान 87.17 तथा मानक विचलन 14.719 प्राप्त हुआ जिसका माध्य अंतर 5.240 तथा टी का मान 3.639 प्राप्त हुआ जो कि सार्थक है क्योंकि यह सार्थक होने के लिए 0.01 स्तर पर आव"यक मान 2.59 से अधिक है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि सभी ग्रामीण व शहरी छात्रों में कुल चारों क्षेत्रों में सार्थक अंतर है।

सारणी 1.1 के निष्कर्ष

पाठ्य पुस्तक से सम्बंधित निष्कर्ष

ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के अभिमत के आधार पर प्रथम क्षेत्र 'पाठय–पुस्तक से सम्बंधित में शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1. ग्रामीण एवं शहरी दोनों विद्यालयों में सबसे ज्यादा NCERT की पुस्तकों का ही प्रयोग होता है।
2. तथा सहायक पुस्तकों का प्रयोग शहरी एवं ग्रामीण दोनों ही विद्यालयों में कभी–कभी ही होता है।
3. पाठ्य पुस्तक की भाषा उदाहरण तथा कार्टून ग्रामीण एवं सरकारी विद्यालयों के छात्रों को सरल एवं रूचिकर लगते है। दोनों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. पाठ्य पुस्तक में दिए गए अभ्यास एवं मूल्यांकन के प्र"न शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के छात्रों को सरल लगते है दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सहायक सामग्री एवं तकनीक से संबंधित निष्कर्ष

1. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के अभिमत के आधार पर द्वितोय क्षेत्र सहायक सामग्री एवं तकनीक से संबंधित में शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।
2. सहायक सामग्री के रूप में केवल श्याम पट्ट का प्रयोग ही सर्वाधिक होता है। किन्तु शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में श्यामपट्ट का प्रयोग अधिक पाया गया।
3. इसके अतिरिक्त चार्ट एवं मॉडल के प्रयोग में शहरी एवं गामीण क्षेत्र में अन्तर पाया गया। चार्ट एवं मॉडल का प्रयोग कभी–कभी ही होता है। किन्तु शहरी विद्यालयों की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों में अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।
4. जबकि कम्प्यूटर एवं पी.पी.टी. का प्रयोग दोनों ही क्षेत्रों में नहीं पाया गया।

शिक्षण विधि एवं सहायक सामग्री से सम्बंधित निष्कर्ष

1. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के अभिमत के आधार पर तृतीय क्षेत्र ि"ाक्षण विधि एवं सहायक सामग्री के मध्य शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. ि"ाक्षण विधि के रूप में समूह चर्चा का प्रयोग कक्षा में कभी–कभी होता है परन्तु शहरी क्षेत्र की तुलना में गामीण विद्यालयों में अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।
3. वाद–विवाद के कक्षा में कभी–कभी प्रयोग में भी ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों में वाद–विवाद का प्रयोग अधिक पाया गया।
4. नाटक के माध्यम से ि"ाक्षण में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण विद्यालयों में नाटक द्वारा ि"ाक्षण कभी–कभी तथा शहरी विद्यालयों में कभी नहीं पाया गया।
   a. पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का ि"ाक्षण में प्रयोग में ग्रामीण एवं सरकारी विद्यालयों में सार्थक अन्तर पाया गया। निबंध प्रतियोगिता क्वीज, वाद विवाद प्रतियोगिता सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का प्रयोग शहरी विद्यालयों की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों में ही कभी–कभी पाया गया।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से सम्बंधित निष्कर्ष

1. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के अभिमत के आधार पर क्षेत्र चतुर्थ ि"ाक्षण अधिगम प्रक्रिया में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. शहरी विद्यालय की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों में कक्षा में छात्रों से प्र"न अधिक पूछे जाते हैं।
3. छात्रों को कक्षा में प्र"न पूछने के अवसर भी शहरी की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों में सदैव पाये गया।
4. कक्षा में अधिका"ा समय लेखन कार्य सदैव शहरी विद्यालय की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों में अधिक पाया गया। अतः सार्थक अन्तर है।
5. ि"ाक्षण में राजनीतिक घटनाओं तथा समाचार पत्रों की घटनाओं की चर्चा शहरी विद्यालयों की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों में अधिक पायी गयी।

6. राजनीति विज्ञान में स्वयं करके सीखने के अवसर शहरी की अपेक्षाकृत ग्रामीण छात्रों को ही कभी–कभी मिलते है।

सारणी 1.2 के अनुसार

ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के अभिमत के आधार पर कुल चारों क्षेत्रों में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में सार्थक अन्तर पाया गया तथा राजनीति विज्ञान ि"क्षण की स्थिति शहरी की तुलना में ग्रामीण विद्यालयों अच्छी पायी गई।

सुझाव

राजनीति विज्ञान एक ऐसा विषय है जिस रटन की बजाय व्यावहारिक प्रयोग में लाना अति–आव"यक है। जिससे वह राजनीतिक मुद्दो को समझ सके, तथा स्वयं उसका मूल्यांकन कर सके।

1. ि"क्षण में अधिक से अधिक वार्तालाप चर्चा, वाद विवाद का प्रयोग किया जाए।
2. कक्षा में स्थानीय जीवन से जुड़ी राजनीतिक घटनाओं की चर्चा की जाएं, तथा छात्रों को उस पर विचार अभिव्यक्त करने के अवसर दिए जाए।
3. टेलीविजन पर लोकसभा की कार्यवाही तथा राजनीतिक मुद्दों पर बहस की रिकार्डिंग दिखाने की व्यवस्था की जा सकती है तथा छात्रों को उस बहस पर परिचर्चा तथा विचार अभिव्यक्त के अवसर दिए जाए।
4. आस–पास की दैनिक राजनीति से जुड़ी घटनाओं की चर्चा कहानी के माध्यम से कक्षा में की जाए।
5. समय–समय पर स्थानीय व राष्ट्रीय मुद्दों पर वाद–विवाद प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा सकता है।
6. अधिक से अधिक क्रिया आधारित गतिविधियाँ हो तथा उसके आधार पर मूल्यांकन की पाठ्यक्रम में व्यवस्था हो।
7. समूह चर्चा एवं वाद विवाद के अतिरिक्त, भूमिका निर्वहन तथा भमण विधि का ि"क्षण में न केवल प्रयोग बल्कि पाठ्यक्रम में भी व्यवस्था हो।
8. वास्तव में राजनीति विज्ञान का ि"क्षण केवल कक्षा तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता वरन् उसका वास्तविक क्षेत्र कक्षा से बाहर होना चाहिए। गांवों में पंचायतों की प्रक्रिया जिला मुख्यालय स्थानीय न्यायालय चुनाव प्रबन्ध मतदान प्रक्रिया आदि को वह पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा स्वयं देख कर या नाटक के माध्यम से अधिक समझ सकते है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रश्नावली साक्षात्कार अनुसूची अवलोकन तथा पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष निकलता है।

1. पाठ्यक्रम विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि पाठ्यक्रम में नवीन समकालीन राजनीतिक मुद्दों का अभाव है। सत्रीय कार्य भी केवल 12वीं कक्षा के लिए है। पाठ्यक्रम के आधार पर छात्रों को स्वयं करके सीखने के अवसर की व्यवस्था कम है तथा राजनीति विज्ञान की व्यावहारिकता के लिए भी शिक्षण विधियों की पाठ्यक्रम में व्यवस्था होनी चाहिए।
2. पाठ्य पुस्तक में नवीन उदाहरणों, घटनाओं मुद्दों का अभाव है। गतिविधियों बहुत अधिक दी गई है। पाठ्यपुस्तक में जगह जगह कार्टून का प्रयोग है जो छात्रों के लिए मनोरंजक एवं अधिगम में सहायक है।
3. सहायक सामग्रिया के रूप में कवल श्यामपट्ट का ही प्रयोग अधिकतर होता है। चार्ट, मॉडल एवं नक्शे का प्रयोग बहुत कम होता है।
4. ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों में राजनीति विज्ञान का शिक्षण अधिकतर परम्परागत विधिया से ही होता है। नवीन विधियों एवं तकनीक का प्रयोग बहुत कम पाया गया।
5. अभिनय विधि, भ्रमण विधि का शिक्षण में प्रयोग बिल्कुल नहीं होता। समूह चर्चा तथा वाद–विवाद का प्रयोग भी शिक्षण में कम पाया गया।
6. छात्रों को स्वयं करके सीखने तथा क्रिया आधारित शिक्षण का अवसर बहुत कम मिल पाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बत्रा, डॉ. पूनम 'राजनीतिशास्त्र की पुस्तकों पर टिप्पणी' शिक्षा विमर्श जनवरी, फरवरी 2007।
2. यादव, प्रो. योगेन्द्र 'लोकतन्त्र और स्कूली शिक्षा' शिक्षा विमर्श जुलाई, अगस्त (2007)।
3. विशम्भर, ''राजनीति विज्ञान की पाठय पुस्तकें'' शिक्षा विमर्श जुलाई–अक्टूबर (2012)।
4. कुमावत, भागचन्द खोजे और जाने अंक–4, अजीज पमाजी विश्वविद्यालय।
5. National curriculum frame work review (2005) Vol. I, National focus groups, New Delhi NCERT.
6. Position paper teaching of social science (2007) first edition, New Delhi NCERT.
7. विद्या लंकार सत्यकेतु (1985) राजनीतिशास्त्र (राज्य और राज्य शासनः नई दिल्ली सरस्वती सदन।
8. Dharmawat, Isha (1999): "A study of Training programme for civies Teachers on the basis of actual need of the School." M.Ed. Rajasthan Vidhyapeeth, Udaipur.
9. Gandhi, Premlata (1987): "A comparative study of effect of the teaching of civics by lecture method and Project method." M.Ed. Rajasthan Vidhyapeeth, Udaipur
10. Goswami, Rekha (1987): "A study of attitude towards constitutional values of Ist year Arts students studying Political Science and those not studying Political Science." M.Ed. Rajasthan Vidhyapeeth, Udaipur.
11. Kumawat, Usha (2012): "A study of the 'Teachers and students Perception of the Political Science Text books based on the NCF-2005 at the Senior Secondary Level." M.Ed. Rajasthan Vidhyapeeth, Udaipur.